परसेवे वस्तर साथना, नाहवा समे उतार्‍या जेह।
श्री राज बेठा तेह ऊपर, तमे प्रेम ते जो जो एह।। २२ ।।

सुन्दरसाथ ने नहाते समय पसीने के जो वस्त्र उतारे थे, श्री राजजी महाराज उनके आसन पर विराजमान हुए। श्री राजजी महाराज के इस प्रेम को तो देखो।

जमुनाजीने कांठडे, कांई द्रुमवेलीनी छांहें।
साथ सहु मलीने सामटो, कांई आव्यो ते आनंद मांहें।। २३ ।।

यमुनाजी के किनारे पेड़ों और लताओं की छाया में सब सखियां आनन्द भरी इकट्ठी हुईं।

बेठा मली आरोगवा, कांई सोभित जुजवी पांत।
सो सखी सों इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत।। २४ ।।

इसके बाद अलग-अलग पंक्तियों में आरोगने के लिए बैठ गईं तथा श्री इन्द्रावतीजी सौ सखियों के संग परोसने के लिए तैयार हो गईं।

।। प्रकरण ।। ४५ ।। चौपाई ।। ८४७ ।।

राग वेराडी–भोग

फरतण फेर बाजोटिया, रंग पाकी परवाली।
कांबी पडगी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली।। १ ।।

पहलदार पक्के मूंगिया रंग की चौकी है, जिसके किनारे पर कांगरी की शोभा ऐसी बनी है, जो देखते ही बनती है।

चारे गमां वाल्या चाकला, बेठां वाली पलाठी।
सोभा मारा वालाजीनी सी कहूं, जे आतमाए दीठी।। २ ।।

चारों तरफ चाकला (आसन) बिछे हैं। जिस पर वालाजी पालथी (चौकड़ी) मारकर बैठे हैं। अपने वालाजी की शोभा जो मैंने अपनी आत्मा से अनुभव की, वह कहने में नहीं आती है।

श्रीठकुराणीजी श्रीराजसों, भेलां बेसे सदाय।
आसबाई सुंदरबाई, बेठा एणी अदाय।। ३ ।।

श्री ठकुरानीजी श्री राजजी के साथ सदा ही बैठती हैं। ऐसी अदा से आसबाई, सुन्दरबाई बैठी हैं।

हाथ पखाल्या पात्रमां, जुजवी जुगते।
पासे साथ बेठो मली, सहु कोय एणी विगते।। ४ ।।

एक पात्र के अन्दर विशेष युक्ति से उनके हाथ धुलवाए, पास में जो सखियां बैठी थीं, सभी ने इस तरह से हाथ धोए।

ऊपर वन रंग छाइयो, जाणे मंडप रचियो।
प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग मांहें मचियो।। ५ ।।

ऊपर वन की छाया इस प्रकार छाई है जैसे मण्डप बना हो। परोसने वाले सुन्दरसाथ आनन्द में आ गए (तैयार हो गए)।

Nijanand App

थाली धात वसेकनी, जुगते अजवाली।
लाल जडाव लोटे जल, लई प्रेमे पखाली।। ६ ।।

थाली वहां विशेष धातु की है। इसे अच्छी तरह से साफ किया गया है। लाल नगों से जड़े लोटे में जल है, जिससे बड़े प्रेम से थाली धोई।

वाटका फूल कचोलियां, ते तो जुगते जडिया।
अजवालीने पखालिया, थाली माहें मलिया।। ७ ।।

फूल (कांसा) की धातु का वाटका (कटोरा) और कटोरी हैं। यह नगों से जड़ी हैं। इनको धोकर थाल में रखा।

वली नितारी अजवालिया, रूमाल संघातें।
प्रीसे छे सारी सूखडी, विध विध कई भांते।। ८ ।।

बर्तनों में लगे पानी को गिराकर रूमाल से पोंछा और कई कई प्रकार से मिठाई (सुखडी) परोसती हैं।

बाई भागवंती भली पेरे, प्रीसे सूखडी सारी।
कहूं केटली घणी भांतनी, सर्वे मूकी संभारी।। ९ ।।

भागवन्तीबाई, भली-भांति अच्छी सुखडी परोसती है। सुखडी कई किस्म की हैं, जिन्हें संभाल कर परोसती है।

पकवान सर्वे प्रीसी करी, साक मूक्यां छे घणां।
कंदमूल भांत भांतनां, अलेखे अथाणां।। १० ।।

विविध प्रकार के पकवान परोस कर, बहुत से साग (सब्जियां) जिनमें तरह-तरह के कन्दमूल हैं तथा बहुत प्रकार के अचार हैं।

साक ते सूकवणी तणां, कई सेक्यां सुतलियां।
विध विध मेवा वन फल, अति उत्तम गलियां।। ११ ।।

कई साग सूखे हैं, कई साग तले हैं तथा कई साग सेके हैं। तरह-तरह के मेवा, पके हुए वन फल परोसे।

आरोग्या अति हेतसों, राज साथ संघाते।
प्रीसंतां प्रेम जो में दीठो, ते न केहेवाय भांते।। १२ ।।

श्री राजजी तथा सब सुन्दरसाथ ने प्रेम से आरोगा। परोसने में जो प्रेम देखा वह कहने में नहीं आता।

कंचन रंग झारी भरी, जल विच मांहें लीधो।
श्री इंद्रावतीजी ने कोलियो, श्री राजे मुख मांहें दीधो।। १३ ।।

सोने के रंग की झारी पानी से भरी है, जिससे अधबीच में जल पिया तथा श्री राजजी ने अपने हाथ से एक (गिराही, गिरास) कौर श्री इन्द्रावतीजी के मुख में दिया।

हरख थयो जे एणे समे, साथे सहु कोइए दीठो।
हसियां रमियां साथसो, घणो लाग्यो छे मीठो।। १४ ।।

इस समय सबको बड़ी हंसी आई और सभी ने देखा। सबके साथ हंसते-खेलते बड़ा अच्छा लगा।

Nijanand App

आरोग्या आनंदसों, जेणे जे भाव्यां।
दूध दधी ते ऊपर, लाडबाई लई आव्यां।। १५ ।।

जिसको जो कुछ अच्छा लगा, सभी ने आनन्द से आरोगा। इसके बाद दूध और दही लेकर लाडबाईजी आ गईं।

ते लीधां चल्लू करावियां, बेठा वांसे तकियो दई।
थाल बाजोट उपाडियां, लोयुं मुख रुमाल लई।। १६ ।।

उन्होंने आकर चुल्लू कराया। तब सब तकियों का सहारा लेकर बैठ गए। थाली व चौकियां उठा ली गईं तथा रूमाल से मुख पोंछा।

फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली।
ऊपर लवंग दई करी, पान बीडी वाली।। १७ ।।

सुपारी, कत्था, चूना, जावित्री, केसर, कपूर तथा ऊपर से लौंग लगाकर पान के बीड़े लगाए।

बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सहु साथ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज ने पान बीड़ा आरोगा। सब सुन्दरसाथ ने भी पान बीड़ा लिया। जो सुन्दरसाथ परोस रहे थे, उनको अब प्राणनाथ स्वयं परोस रहे हैं।

आरोग्या सहु अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख।
बेठा मली वातो करवा, वाणी लेवा सुख।। १९ ।।

सब सखियों ने बड़े आनन्द से आरोगा और पान बीड़ा लिया। इसके बाद सब मिलकर बातें करने बैठे और वचनों का आनन्द लेने लगे।

कहे इंद्रावती साथजी, वाले विलास जो कीधा।
चढी आव्या अंग अधिका, वचे व्रह जो दीधा।। २० ।।

इन बातों में विलास और बीच में जो वियोग अन्तर्ध्यान का हुआ था, श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, वह याद आ गया।

।। प्रकरण ।। ४६ ।। चौपाई ।। ८६७ ।।

राग श्री गोडी रामग्री

वाला वालमजी मारा, जीरे प्रीतम अमारा।। टेक ।।
तमे रामत रंगे रमाडियां, पण सांभलो मारी वात।
अम ऊपर एवडी, तमे कां कीधी प्राणनाथ।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरे प्यारे वालाजी! आपने हमें बड़े आनन्द से रामतें खिलाईं, परन्तु हमारी बात भी सुनो। आपने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?

अवगुण एवडा अमतणां, किहां हुता वालम।
एम अमने एकलां, मूकी गया वृंदावन।। २ ।।

हे धनी! इतना बड़ा अवगुण हमारे में कहां था? जिससे आप हमें वृन्दावन में अकेला छोड़कर चले गए।

Nijanand App